हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ५

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

खुश हो जाओ

हम सभी अपना श्वास थामे श्री निलय हॉल में एकत्र थे और प्रतीक्षा कर रहे थे। किसी भी क्षण, गुरुमाई जी महोत्सव सत्संग के लिए पधारेंगी!

हॉल को बड़े ही उत्कृष्टरूप से इस अवसर के लिए सजाया गया था। अरुणोदय के रंगों से मेल खाते गुलाब के फूलों से भरे बड़े-बड़े फूलदान गुरुमाई जी के आसन के चारों ओर रखे थे — ये गुलाब हलके गुलाबी, गहरे मूँगिया और सुनहरा रंग लिए हुए सफ़ेद रंग के थे। सफ़ेद कुमुदिनी और गुलाबी रंग के गुलाबों की मालाएँ बाबा मुक्तानन्द और देवी महालक्ष्मी की पूजा-वेदी पर उनकी तस्वीरों पर सजी थीं; प्रत्येक वेदी पर प्रचुर मात्रा में रोज़क्वार्ट्ज के स्फ़टिक, फलों के पात्र तथा और भी बहुत-से फूल सजाए गए थे। ये वे फूल थे जिन्हें विश्वभर के भक्तों ने गुरुमाई जी के जन्मदिन पर उन्हें अर्पित किए थे। इन फूलों ने पूरे हॉल को, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् की उदारता से भर दिया था।

हम प्रतिभागियों ने महोत्सव के लिए जो वस्त्र पहने थे, वे इस परिवेश के झिलमिलाते रंगों व जगमगाते सौन्दर्य में चार-चाँद लगा रहे थे। हम लोग अपने बेहतरीन परिधानों में सजे-सँवरे थे — तरह-तरह की पोशाकें, साड़ियाँ, कुर्ते, नीले, हरे, सुनहरे, रानी रंगों में तथा अन्य और जो भी रंग आप सोच सकते हैं, उन सभी रंगों में मौजूद थे।

और फिर, वह क्षण आया — हमने श्री निलय के ठीक बाहर, निधि चौक में गुरुमाई जी की आवाज़ सुनी। सहज ही हम सब खड़े हो गए और हॉल के प्रवेश-द्वार की ओर मुड़ गए।

जब गुरुमाई जी ने श्री निलय की चौखट पार कर अन्दर क़दम रखा तो हम सबने पूरे जोश के साथ शुभकामनाओं का सुघोष किया, "जन्मदिन मुबारक़!" हम *बड़े* पुलकित थे — आज गुरुमाई जी का जन्मदिन था!

हॉल में प्रवेश करने के बाद गुरुमाई जी, महालक्ष्मी और बाबा मुक्तानन्द की पूजा-वेदी पर पलभर के लिए रुकीं और फिर हॉल के बीच में बने रास्ते से हॉल के अग्र भाग में आईं। गुरुमाई जी के आसन ग्रहण करने के बाद हम सब भी अपने-अपने स्थान पर बैठ गए।

स्वामी ईश्वरानन्द माइक के सामने आकर खड़े हुए क्योंकि इस अवसर पर वे एक वार्ता देने वाले थे। सबसे पहले उन्होंने गुरुमाई जी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और फिर स्वामी जी ने मुड़कर हम सभी से पूछा, "सभी लोग ख़ुश हैं?" हम सबने तुरन्त उत्तर दिया, "हाँ!"

गुरुमाई जी ने स्वामी जी को देखा और उनसे पूछा कि यदि सबने कहा होता, "नहीं," तब वे क्या करते। स्वामी जी किंकर्तव्यविमूढ़ रह गए, वे अवाक् थे। स्वामी जी आगे अपनी बात जारी रख सकें इसलिए उन्हें सम्बल देते हुए गुरुमाई जी ने उनसे कहा कि एक बार फिर से वे लोगों से वही प्रश्न करें। गुरुमाई जी ने मज़ाक में हम सभी को इशारे से कहा कि इस बार हम 'ना' में उत्तर दें।

स्वामी जी ने फिर से पूछा, "क्या आप ख़ुश हैं?" और हम सभी ने बड़ी तत्परता से जोशीली आवाज़ में कहा, "नहीं!" स्वामी जी हँस पड़े और फिर बोले, "मेरे पास आपके लिए एक सुझाव है : ख़ुश हो जाइए! क्योंकि यह एक बड़ा ही विशेष दिन है!"

हमारी तालियों की गड़गड़ाहट से सारा हॉल गूँज उठा।

फिर गुरुमाई जी ने एक प्रख़्यात जैज़ पियॉनो वादक कैनी वॅर्नर को ख़ुश होने का एक गीत बजाने के लिए आमन्त्रित किया। कैनी इतने निपुण कलाकार हैं कि उनकी उँगलियाँ तत्काल ही पियॉनो पर नृत्य करने लगीं। उनकी शहद-सी मधुर आवाज़ पूरे हॉल में छा गई; हम लोग यथार्थ में उनकी आवाज़ को स्फटिकों व हीरों की कनियों की भाँति हवा में घूमते और चमचमाते देख सकते थे।

एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने कहा :

> जब कैनी ने गुरुमाई जी के निवेदन का प्रत्युत्तर बिना किसी झिझक के दिया तो मैंने पूर्ण आनन्द व मुक्ति का अनुभव किया।

स्टाफ़ के एक सदस्य ने कहा :

> मैंने महसूस किया कि कैनी का संगीत गुरुमाई जी के आशीर्वादों व प्रेम को समस्त ब्रह्माण्ड में भेज रहा था।

संगीत की समाप्ति पर गुरुमाई जी ने कहा, "तुम खुश हो गए!" हम सब सहमति में हँस पड़े। गुरुमाई जी ने स्वामी ईश्वरानन्द को एक बार फिर से वही प्रश्न पूछने के लिए आमन्त्रित किया जिसके परिणामस्वरूप इतने उल्लासपूर्ण आदान-प्रदान का आरम्भ हुआ था।

स्वामी जी ने दबी-सी हँसी के साथ हमसे पूछा, "खुश?"

"जी! हाँ!" हमने जवाब में कहा।

अपनी वार्ता शुरू करने के पहले स्वामी ईश्वरानन्द ने अपना परिचय दिया। फिर गुरुमाई जी ने स्वामी जी से सभी स्वामीगण का परिचय कराने के लिए कहा। गुरुमाई जी ने हमसे कहा कि उन्हें अपने जन्मदिन पर सिद्धयोग के स्वामीगण का अभिनन्दन करना पसन्द है।

अतः स्वामी जी ने सभी स्वामीगण का परिचय देना आरम्भ किया, और इस अभिनन्दन को स्वीकार करने के लिए एक-एक करके सभी स्वामीगण बड़ी ही विनम्रता और कृतज्ञता के साथ खड़े होते गए — स्वामी अखण्डानन्द, स्वामी अनन्तानन्द, स्वामी शान्तानन्द, स्वामी वासुदेवानन्द, स्वामी असंगानन्द, स्वामी अलक्षानन्द, स्वामी इन्दिरानन्द, स्वामी उमेशानन्द, स्वामी अपूर्वानन्द।

स्वामी जी ने उन स्वामीगण का अभिनन्दन किया जो अन्य सिद्धयोग आश्रमों में थे। स्वामी कृपानन्द, स्वामी सिद्धानन्द और स्वामी शाक्तानन्द ओकलैण्ड के सिद्धयोग आश्रम में थे। *जैसे ही* स्वामी ईश्वरानन्द एक और स्वामी जी का नाम लेने वाले थे वैसे ही हम सभी एक स्वर में बोले, "गुरुदेव सिद्धपीठ में स्वामी सेवानन्द!" स्वामी जी हँस पड़े और फिर बोले, "मैं उनका नाम लेने ही जा रहा था।"

इस अभिनन्दन के बाद, स्वामी ईश्वरानन्द ने गुरुमाई जी के २०१८ के सन्देश, सत्संग के विषय पर एक बहुत ही उत्तम वार्ता दी। एक दिन पहले हम सबने जन्मदिन महोत्सव-सारिणी बनाने में अपना योगदान दिया था, उसके बाद, रात ही रात में स्वामी जी ने यह वार्ता तैयार की थी — और *अत्यन्त* सहजता से उन्होंने इसे प्रस्तुत किया।

स्वामी जी की वार्ता के कुछ रत्न इस प्रकार हैं :

> आत्मज्ञानी श्रीगुरु के विषय में शिवसूत्र में कहा गया है, "दानमात्मज्ञानम्।" ऐसी महान आत्मा, "निरन्तर आत्मज्ञान, प्रदान करती रहती है," परम सत्य का ज्ञान। अतः जब आप परम सत्य के ज्ञाता के सान्निध्य में आते हैं, आप सत्संग करते हैं, आप "परम सत्य की संगति में होते हैं।"
>
> चालीस वर्षों से भी अधिक समय से मैंने सिद्धयोग पथ पर सेवा अर्पित की है। और मैंने यह देखा है कि प्रतिदिन गुरुमाई जी सत्संग करती रहीं हैं व निरन्तर सत्संग कर रहीं हैं। इस सत्संग की शक्ति, कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करती है तथा लोगों को परम सत्य की अनुभूति प्रदान करती है।
>
> गुरुमाई जी ने जो सत्संग संसार के विभिन्न भागों में अपनी शिक्षण यात्राओं के दौरान किए थे और जो वैश्विक सत्संग सैटेलाइट द्वारा किए थे वे सभी सत्संग मुझे याद हैं। सिद्धयोग के वैश्विक हॉल में हमने सीधे व सजीव प्रसारण के माध्यम से सत्संग में भाग लिया है, साथ ही सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर वीडिओ व अन्य अनेक रूपों में सिखावनियाँ प्राप्त की हैं। निश्चित ही, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के माध्यम से हर दिन व हर रात सत्संग को उपलब्ध कराया जाता है।
>
> गुरुमाई जी के साथ, हर आदान-प्रदान एक सत्संग है।

फिर स्वामी जी ने दो सुन्दर कहानियाँ सुनाईं जो यह दर्शाती हैं कि गुरुमाई जी किस प्रकार सिखाती हैं।

यह थी पहली कहानी :

> एक सिद्धयोगी ने कई वर्षों से गुरुमाई जी के दर्शन नहीं किए थे। कुछ दिन पूर्व उनकी गुरुमाई जी से भेंट हुई। उन सिद्धयोगी ने गुरुमाई जी को बताया कि वे एक बहुत बड़ी कम्पनी में दस साल तक उसकी प्रमुख के पद पर कार्यरत थीं और जब से वे सेवानिवृत्त हुईं हैं तबसे किसी को भी उनकी याद नहीं है।

गुरुमाई जी ने बड़ी मधुरता से उनकी ओर देखा और बहुत उत्साह के साथ कहा, "हम तुम्हारी याद करते हैं एक महान ध्यान करनेवाली के रूप में। हम तुम्हें एक परोपकारी के रूप में याद करते हैं। हमें एक दयालु व्यक्ति के रूप में तुम्हारा स्मरण है। सच में, कितने ही लोगों ने बताया है कि तुम किस प्रकार से उनकी मदद करती रही हो।"

जब गुरुमाई जी बात कर रहीं थीं तो वे महिला खुलकर मुस्कराने लगीं क्योंकि उन्हें यह समझ में आ रहा था कि गुरुमाई जी उनका ध्यान उनकी अच्छाई की ओर वापस ला रहीं थीं, वे जो वास्तव में हैं उस सत्य की ओर उनका ध्यान वापस ला रहीं थीं। वह अभिज्ञान का एक क्षण था। गुरुमाई जी के शब्द उन महिला को उनकी अपनी सच्ची आत्मा की संगति में ले आए थे : सत्संग।

स्वामी जी ने फिर दूसरी कहानी सुनाई :

कल, श्री निलय में, मध्याह्न काल के सत्संग में एक छोटा-सा बच्चा रोने लगा तो उसके पिता ने उसे गोद में लिया और उसे धीरे-धीरे अपनी बाहों में झुलाते हुए शान्त करने का प्रयास करने लगे। कुछ पलों बाद गुरुमाई जी ने उस बच्चे की माँ से पूछा कि कहीं वह दूध तो नहीं माँग रहा। माँ ने हाँ में सिर हिलाया।

वह एक मीठी-सी बातचीत थी और उसका परिणाम बहुत ही व्यावहारिक था। दूध पीने के बाद बच्चा मुस्कराने लगा।

स्वामी जी ने आगे कहा :

सत्संग में हम सभी का पोषण होता है। परम सत्य के लिए हमारी तड़प, परमात्मा के अनुभव के लिए हमारी तड़प, हम कौन हैं यह जानने की लिए हमारी तड़प पूर्ण होती है।

एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने बाद में बताया :

स्वामी जी के द्वारा बताई गई इन कहानियों को सुनने से, मुझे कृतज्ञता के स्रोत का अनुभव हुआ कि मेरे पास एक सिद्धगुरु हैं जो सतत मुझे यह स्मरण कराती हैं कि मैं वास्तव में कौन हूँ, वे समस्त सृष्टि में व्याप्त दिव्यता का स्मरण कराती हैं। इस ज्ञान से, इस स्मरण से सहज ही करुणा का उदय होता है।

गुरुमाई जी के सत्संग पर स्वामी जी की वार्ता हम सभी के अन्तर में गहरी उतर गई। हमने इस बात पर मनन किया कि हम सभी के लिए शक्तिपात प्राप्त करने का क्या अर्थ है तथा श्रीगुरु के मार्गदर्शन में परम सत्य की अनुभूति करने का क्या अर्थ है।

फिर गुरुमाई जी ने हमें उनकी ओर से कुछ करने के लिए कहा . . . .

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .